

पौष्टिक अनाजों का वैश्विक एवं भारतीय परिदृश्य

बी. वेंकटेश भट*, सूगण्ण, महेश कुमार***, के.वी. राघवेन्द्र राव**** और सी.वी. रत्नावती*******

पौष्टिक अनाज, देश के शुष्क क्षेत्रों की प्रमुख पारंपरिक खाद्य फसलें हैं। भारत सरकार द्वारा अत्यधिक पोषक तत्वों से युक्त होने के कारण इन्हें 'पौष्टिक अनाज' का नाम दिया गया। उपभोक्ताओं की खाद्य एवं पौष्टिक सुरक्षा में इनका पर्याप्त योगदान है। पौष्टिक अनाज ऐसी खाद्यान्न फसलों का समूह है, जिनके बीज छोटे होते हैं तथा उष्णकटिबंधीय व उपोष्णकटिबंधीय जलवायु में बहुत ही कम निवेश के साथ इनकी खेती की जा सकती है। बड़े पौष्टिक अनाजों के अंतर्गत ज्वार (सोरघम बाइकलर), बाजरा *(पेनिसेटम टाइफॉइडेस)*, रागी/मडुआ *(एल्युसिन कोरकाना)* तथा छोटे पौष्टिक अनाजों के अंतर्गत कंगनी *(सेटारिया इटैलिका)*, कुटकी *(पैनिकम मिलियेर)*, कोदो *(पस्पालम स्क्रॉबिकुलेटम)*, सांवां/झंगोरा *(एकिनोक्लोआ फ्रुमेंटैशिया)*, चेना *(पैनिकम मिलियेशिएम)* तथा कौरैले/ब्राउन टॉप मिलेट *(ब्रैकिएरिआ रामोसम)* आते हैं।

पौष्टिक अनाज की फसलें सीमांत (शुष्क) पर्यावरण में बहुत अच्छा प्रदर्शन करती हैं। अत्यधिक सूक्ष्म पोषक तत्वों एवं कम ग्लाइसेमिक सूचकांक के साथ पोषण गुणों में ये श्रेष्ठ होती हैं। अत: पौष्टिक अनाज फसलें केवल पोषण ऊर्जा का स्रोत ही नहीं, बल्कि जलवायु परिवर्तन के अनुकूल लचीली भी हैं।

उत्पादन परिदृश्य

पौष्टिक अनाजों की कम वर्षा (200-600 मि.मी.) वाले क्षेत्रों में खेती की जाती है। ये फसलें सूखा सहिष्णु तथा अत्यधिक अनुकूलनीय होने के कारण शुष्क भूमि कृषि पारिस्थितिक तंत्र हेतु अत्यंत उपयुक्त हैं। इनमें से कुछ पर्वतीय तथा जनजातीय कृषि के लिए महत्वपूर्ण हैं। पौष्टिक अनाजों ने सदियों से अभावग्रस्त भौगोलिक क्षेत्रों के लोगों को खाद्य तथा पोषण सुरक्षा प्रदान की है। बढ़वार के लिए पानी की कम आवश्यकता, शीघ्र परिपक्व होने की क्षमता तथा खेती हेतु कम निवेश की आवश्यकता के कारण ये खाद्य फसलें अद्वितीय हैं। इन फसलों का कम वर्षा वाली परिस्थितियों के अनुसार अत्यंत अनुकूलित होना, लंबे समय तक सूखे का सामना करने में सक्षम होना, देरी से वर्षा के बाद तेजी के साथ सामान्य होना कृषि संबंधी फायदे हैं, जो उन्हें उत्तम आकस्मिक फसलें बनाते हैं। पौष्टिक अनाज की फसलें विविध पारिस्थितिक स्थितियों के अनुसार अत्यधिक लचीली हैं। जलवायु परिवर्तन तथा आकस्मिक बुआई हेतु आदर्श फसलें हैं। ये उच्च जल दक्षता तथा कम निवेश की आवश्यकता के साथ अत्यधिक पर्यावरण अनुकूल हैं, परंतु ज्यादा निवेश प्रबंधन के प्रति भी उतनी ही सक्रिय हैं। कृषकों के अनुकूल होने के

पौष्टिक अनाज

पौष्टिक अनाजों में विशिष्ट पोषक गुण पाए जाते हैं। इनमें जटिल कार्बोहाइड्रेट, प्रचुर खाद्य रेशे के साथ-साथ अद्वितीय औषधीय गुण वाले फिनॉलिक यौगिक तथा पादप-रसायन (फाइटो रसायन) पाए जाते हैं। पौष्टिक अनाज भारत में कुपोषण की समस्या को दूर करने के लिए आवश्यक आयरन, जिंक, कैल्शियम तथा अन्य पोषक तत्वों का प्राकृतिक स्रोत हैं। महामारी विज्ञान अध्ययन दर्शाते हैं कि स्वास्थ्य को बढ़ावा प्रदान करने वाले पादप पोषक-तत्वों (फाइटोन्यूट्रिएंट) के संरक्षात्मक प्रभाव के कारण आहार में प्रचुर मात्रा में साबुत खाद्यान्न पादप खाद्य असंक्रामक रोगों जैसे-मधुमेह, कैंसर तथा हृदय संबंधी रोग के प्रति रक्षात्मक होते हैं। ये गैर-अम्लीय होते हैं। अत: आसानी से पचते हैं तथा इनसे एलर्जी भी नहीं होती है। यह सुस्पष्ट है कि इन अनाजों को प्रमुख खाद्य के रूप में उपयोग करने वाले लोगों में मधुमेह तथा जठरांत्र नाल संबंधी विकारों की घटनाएं कम पाई गईं।

*प्रधान वैज्ञानिक; **वैज्ञानिक; ***सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी (राजभाषा); ****मुख्य तकनीकी अधिकारी; *****निदेशक (कार्यकारी), भाकृअनुप-भारतीय कदन्न अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद



रागी

पौष्टिक अनाज के उपयोग

पौष्टिक अनाजों का उपयोग भिन्न-भिन्न देशों तथा महाद्वीपों में अलग-अलग प्रकार से होता है। इनके उपयोग व उत्पादन की किस्मों हेतु जलवायु तथा पैदावार भिन्न-भिन्न होती है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका तथा यूरोप में गुणवत्ता व संबंधित लक्षणों की ओर ध्यान कम देते हुए ज्वार व अन्य पौष्टिक अनाजों की खेती पशु-आहार के उद्देश्य से की जाती है। अत: पैदावार स्तर उच्च है। इसी प्रकार अफ्रीका व एशिया के कुछ देशों में अल्कोहल आधारित पेय तैयार करने में ज्वार का उपयोग किया जाता है, वहां गुणवत्ता महत्वपूर्ण नहीं है। अफ्रीका व एशिया के ऐसे देश जहां पौष्टिक अनाज का मुख्य खाद्य के रूप में सेवन किया जाता है, गुणवत्ता महत्वपूर्ण होती है। वहां अपेक्षित पैदावार क्षमता का ध्यान न रखकर, अधिकांशत: विशेष अनुकूलनयुक्त स्थानीय किस्मों एवं पाक विशेषताओं को ध्यान में रखा जाता है।

सारणी 1. विश्व में पौष्टिक अनाजों की फसल हेतु प्रयुक्त क्षेत्र, उत्पादन तथा उपज (2015-2019 का औसत)

क्र. सं.	पौष्टिक फसलें अनाज	क्षेत्र (मिलियन हैक्टर)	उत्पादन (मिलियन टन)	उपज कि.ग्रा./ हैक्टर)	कुल पौष्टिक अनाज उत्पादन में योगदान (प्रतिशत)	प्रमुख उत्पादक देशों की संख्या
1	सांवां	0.15	0.15	1034	0.16	2
2	रागी	2.31	3.33	1442	3.60	9
3	कंगनी	0.79	2.11	2688	2.28	3
4	कोदो	0.20	0.84	419	0.91	1
5	कुटकी	0.26	0.12	469	0.13	1
6	बाजरा	28.38	23.68	834	25.57	40
7	चेना	0.77	1.19	1535	1.29	36
8	ज्वार	41.91	61.18	1460	66.07	91
उक्त सभी पौष्टिक अनाज		74.77	92.60	1235	100	183

स्रोत : खाद्य एवं कृषि संगठन आंकड़ों के आधार पर

सारणी 2. भारत में 2019 से 2021 के दौरान पौष्टिक अनाजों का क्षेत्र, उत्पादन तथा उपज

फसल	क्षेत्र (हजार हैक्टर)			उत्पादन (हजार टन)			उपज (कि.ग्रा./हैक्टर)		
	2009-2013	2014-2018	2019-2021	2009-2013	2014-2018	2019-2021	2009-2013	2014-2018	2019-2021
ज्वार	6684	4910	4355	4290	4404	4632	913	897	1064
बाजरा	8480	7142	7415	7030	8738	10149	1065	1223	1369
रागी	1211	1104	1097	985	1710	1807	1580	1549	1647
लघु पौष्टिक अनाज	773	570	436	435	403	349	554	707	800
कुल पौष्टिक अनाज	17149	13726	12680	12740	15255	16937	1019	1111	1273

स्रोत : अर्थशास्त्र तथा सांख्यिकी विभाग, भारत सरकार

अलावा इन फसलों का पोषण मूल्य अद्वितीय अर्थात उच्च रेशे, उच्च गुणवत्तायुक्त प्रोटीन तथा खनिज संघटन होने के कारण ये 'पौष्टिक-अनाज' कहलाते हैं।

पौष्टिक अनाजों का वैश्विक परिदृश्य

विश्व के अधिकांश भागों में स्थानीय उपभोग हेतु पौष्टिक अनाजों की जीवन निर्वाह फसल के रूप में खेती की जाती है। अनाज उत्पादन के अलावा चराई, हरे चारे अथवा परिरक्षित चारे (साइलेज) के लिए भी पौष्टिक अनाजों की खेती की जाती है। पशुधन अधिकांश पौष्टिक अनाज उत्पादन प्रणालियों का महत्वपूर्ण घटक है। पौष्टिक अनाजों के अवशेष चारे की आपूर्ति में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। विकासशील देशों में भारत के ज्यादा व्यावसायीकरण खेती वाले क्षेत्रों को छोड़कर, उन्नत प्रौद्योगिकियों के सीमित उपयोग के साथ पौष्टिक अनाजों का व्यापक उत्पादन होता है।

संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसार पूरे विश्व में 74.77 मिलियन हैक्टर क्षेत्र में पौष्टिक अनाजों का उत्पादन 92.6 मिलियन मीट्रिक टन है। विश्व में पौष्टिक अनाजों के कुल उत्पादन में मुख्य रूप से उगाए जाने वाले ज्वार तथा बाजरे का योगदान 91.63 प्रतिशत है। शेष रागी, कंगनी, चेना, कुटकी, सांवां तथा कोदो को मिलाकर 8.37 प्रतिशत योगदान (सारणी-1) है। इसके अलावा उत्पादकता के संबंध में सभी पौष्टिक अनाजों की अपेक्षा लगभग 2688 कि.ग्रा./हैक्टर उपज के साथ कंगनी का प्रभुत्व ज्यादा है। इसके बाद अन्य पौष्टिक अनाजों में पैदावार का क्रम चेना (1535 कि.ग्रा./हैक्टर), ज्वार (1460 कि.ग्रा./हैक्टर),



कुटकी

रागी (1442 कि.ग्रा./हैक्टर), सांवां (1034 कि.ग्रा./हैक्टर), बाजरा (834 कि.ग्रा./हैक्टर), कुटकी (469 कि.ग्रा./हैक्टर) तथा कोदो (419 कि.ग्रा./हैक्टर) (सारणी-1) का है ।

पौष्टिक अनाजों का भारतीय परिदृश्य

भारत में करीब 12.68 मिलियन हैक्टर क्षेत्र में लगभग 16.9 मिलियन टन पौष्टिक अनाज धान्य का उत्पादन होता है। राष्ट्रीय खाद्यान्न उत्पादन में लगभग 6 प्रतिशत योगदान करता है। बाजरे की लगभग 7 मिलियन हैक्टर क्षेत्र में खेती की जाती है, जिससे

सारणी 3 भारत में राज्यवार पौष्टिक अनाजों के अंतर्गत क्षेत्र, उत्पादन तथा उपज (2016-17 से 2020-21 का औसत) का अनुमान

(क्षेत्र 1000 हैक्टर में, उत्पादन 1000 टन में तथा उपज कि.ग्रा./हैक्टर में)

क्र. सं.	राज्य	ज्वार औसत			बाजरा औसत			रागी औसत			लघु पौष्टिक अनाज औसत			कुल पौष्टिक अनाज		
		क्षेत्र	उत्पादन	उपज	क्षेत्र	उत्पादन	उपज	क्षेत्र	उत्पादन	उपज	क्षेत्र	उत्पादन	उपज	क्षेत्र	उत्पादन	उपज
1	आंध्र प्रदेश	134	306	2289	34	63	1881	33	41	1248	22	17	798	222	428	1926
2	अरुणाचल प्रदेश										22	27	1217	22	27	1217
3	असोम										5	3	612	5	3	612
4	बिहार	1	1	1066	4	4	1134	3	3	892	4	3	784	13	12	943
5	छत्तीसगढ़	3	4	1268				6	1	248	83	23	281	92	29	314
6	गुजरात	72	99	1369	423	942	2227	13	14	1076	9	12	1291	518	1067	2062
7	हरियाणा	42	22	527	483	986	2043							525	1009	1921
8	हिमाचल प्रदेश						583	2	2	1037	4	4	840	6	5	879
9	जम्मू व कश्मीर			635	15	8	563	2	1	347	7	2	294	24	11	463
10	झारखंड	3	2	688										3	2	682
11	कर्नाटक	911	954	1047	240	272	1133	666	1071	1609	30	21	721	1847	2319	1255
12	मध्य प्रदेश	157	299	1905	308	692	2246	1	0	277	117	92	788	582	1083	1860
13	महाराष्ट्र	2257	1641	727	719	594	826	86	98	1145	50	25	501	3112	2358	758
14	मेघालय										3	3	947	3	3	947
15	नागालैंड				1	1	1014				9	11	1122	11	12	1106
16	ओडिशा	6	4	632	2	1	619	41	30	738	31	16	513	80	51	639
17	पंजाब				1	1	616							1	1	616
18	राजस्थान	572	433	757	4240	4193	989				10	8	722	4823	4633	961
19	सिक्किम										3	3	1024	3	3	1024
20	तमिलनाडु	379	399	1053	59	142	2404	79	251	3186	24	31	1280	541	823	1521
21	तेलंगाना	78	102	1296	11	10	910	1	2	1270	1	1	1084	91	113	1249
22	त्रिपुरा	1	1	811							1	1	802	1	1	807
23	उत्तराखंड	168	216	1287	907	1853	2044	0	0	0	9	6	691	1084	2075	1915
24	उत्तर प्रदेश							95	132	1391	56	75	1332	151	207	1369
25	प. बंगाल							7	8	1119	3	3	846	10	11	1015
26	दादर व नगर हवेली							1	1	1626				1	1	1571
27	दमन एवं दीव				0	1	1294							0	1	1294
28	पुड्डुचेरी															
29	दिल्ली	3	3	957	1	4	2530							5	7	1456
संपूर्ण भारत		4789	4486	937	7448	9766	1311	1053	1672	1588	504	386	766	13794	16311	1182

स्रोत : अर्थशास्त्र तथा सांख्यिकी विभाग, भारत सरकार

10.1 मिलियन टन तत्पश्चात ज्वार (4.3 मिलियन हैक्टर में 4.63 मिलियन टन), रागी (1.1 मिलियन हैक्टर में 1.8 मिलियन टन) तथा अन्य पौष्टिक अनाजों (0.44 मिलियन हैक्टर में 0.35 मिलियन टन) उपज प्राप्त हुई (सारणी-2)। इन फसलों की अनाज व चारे, दोनों के लिए खेती की जाती है। इन खाद्यान्नों का अधिकांश भाग घरेलू स्तर पर उपयोग हो जाता है। शेष भाग का कुक्कुट आहार, खाद्य प्रसंस्करण तथा पेय (ब्रेवेरिज) उद्योगों में प्रयोग किया जाता है। कुछ मात्रा का बीज, पशु आहार तथा प्रसंस्करित खाद्य पदार्थों के रूप में निर्यात भी किया जाता है। वैश्विक स्तर पर भारत पौष्टिक अनाजों के उत्पादन में, पूरे विश्व में बाजरे की फसल के क्षेत्र में से 28 प्रतिशत क्षेत्र में 41 प्रतिशत उत्पादन तथा ज्वार की फसल के क्षेत्र में से 13 प्रतिशत क्षेत्र में 7 प्रतिशत उत्पादन के साथ

अग्रणी स्थान रखता है। रागी, कुटकी तथा कोदो की अधिकांश खेती देश में की जाती है, जबकि कंगनी (4-5 मिलियन हैक्टर) की अधिकांश खेती चीन में तथा चेना की यूरोप और एशियाई देशों में की जाती है। इसके अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के आकलन के अनुसार 2.6 मिलियन हैक्टर क्षेत्र में चारा ज्वार तथा 0.9 मिलियन हैक्टर क्षेत्र में चारा बाजरे की खेती की जाती है।

यद्यपि लोगों द्वारा प्राचीनकाल से पौष्टिक अनाज धान्यों की खेती एवं उपभोग किए जाने के बावजूद, पिछले कुछ दशकों से भारत एवं पूरे विश्व में पौष्टिक अनाजों के क्षेत्र में उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई है। ज्वार के क्षेत्र, उत्पादन तथा उत्पादकता में वर्ष 2010-11 से 2014-15 तक चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) के साथ क्रमशः 4.4 प्रतिशत, 5.8 प्रतिशत तथा 1.4 प्रतिशत कमी आई। 1980 दशक के मध्य से प्रतिवर्ष ज्वार के क्षेत्र में 3 लाख 60 हजार हैक्टर की दर से कमी अत्यधिक स्पष्ट है (रक्षित तथा अन्य वर्ष 2014)। बाजरे के क्षेत्र (7.3 मीट्रिक हैक्टर) एवं उत्पादन (9.2 मीट्रिक टन) में भी 6 प्रतिशत तथा 3.5 प्रतिशत सीएजीआर के साथ गिरावट की प्रवृति देखी गई। परंतु उत्पादकता में 3.1 प्रतिशत सीएजीआर के साथ सकारात्मक प्रवृति दर्ज की गई। रागी तथा अन्य लघु पौष्टिक अनाजों के क्षेत्र व उत्पादन में भी -1.1 प्रतिशत, -1 प्रतिशत तथा -7.7 प्रतिशत, 3.2 प्रतिशत सीएजीआर के साथ गिरावट की प्रवृत्ति दर्ज की गई। परंतु उत्पादकता में 0.1 प्रतिशत तथा 1.2 प्रतिशत सीएजीआर के साथ थोड़ी सी सकारात्मक वृद्धि पाई गई। भारत में वर्ष 2010-11 से 2014-15 तक पौष्टिक अनाजों के अंतर्गत कुल क्षेत्र में प्रतिवर्ष 5.4 प्रतिशत सीएजीआर के साथ गिरावट आई तथा पौष्टिक अनाजों के कुल उत्पादन में भी प्रतिवर्ष 4 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई। इन फसलों के अंतर्गत क्षेत्र में गिरावट की अपेक्षा इनके उत्पादन में कमी का प्रतिशत कम होने के कारण पिछले पांच वर्षों में 1.2 प्रतिशत सीएजीआर के साथ इनकी उत्पादकता में थोड़ी-सी वृद्धि दर्ज की गई।



सांवां

राज्यों में पौष्टिक अनाजों के अंतर्गत अधिकतम क्षेत्र राजस्थान (4.8 मि हैक्टर; बाजरे के अंतर्गत 57 प्रतिशत) इसके बाद महाराष्ट्र (3.1 मि हैक्टर; ज्वार के अंतर्गत 47 प्रतिशत) तथा कर्नाटक (1.8 मि हैक्टर; ज्वार के अंतर्गत 19 प्रतिशत तथा रागी के अंतर्गत 62.3 प्रतिशत) है (सारणी-3)।

वैश्विक परिदृश्य

ज्वार, बाजरा तथा रागी की दृष्टि से पौष्टिक अनाजों के उत्पादन का वैश्विक परिदृश्य लगभग स्थिर रहा है। भारत में, दुर्गम क्षेत्रों हेतु इन फसलों के उच्च अनुकूलन, जलवायु के अनुरूप खेती तथा सेवन की दृष्टि से अत्यधिक पौष्टिक होने के बावजूद, पौष्टिक अनाजों के अंतर्गत क्षेत्र में अत्यधिक गिरावट आई है। इससे उभरने हेतु कुछ गांवों का समूह बनाकर उनमें किसान उत्पादन संगठनों, खेतों की पहुंच में गोदामों तथा प्रसंस्करण सुविधाओं के निर्माण हेतु नीतिगत सहायता तथा प्रोत्साहन प्रदान करने, किसानों को पौष्टिक अनाज तथा पोषक चारा, दोनों की मूल्य श्रृंखला से जोड़ने तथा ई-राष्ट्रीय कृषि बाजार (ई-नैम) का मंच प्रदान करने से अच्छा मूल्य प्राप्त हो सकता है। उन्हें उन्नत एवं टिकाऊ प्रौद्योगिकियों को अपनाकर पौष्टिक अनाजों के ज्यादा उत्पादन हेतु प्रोत्साहित किया जा सकता है। इसके अलावा पोषण सुरक्षा को मजबूती प्रदान करने के लिए खरीद व वितरण की नीति बनाकर पौष्टिक अनाजों को लोक वितरण प्रणाली में शामिल किया जा सकता है। पौष्टिक अनाजों की उपलब्धता व पहुंच को सुनिश्चित करके, लोक प्रचार के माध्यम से उनके स्वास्थ्य एवं पौष्टिक पहलुओं के संबंध में जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ उन्हें सार्वजनिक वित्त पोषित कल्याण कार्यक्रमों की मुख्य धारा में सम्मिलित किया जा सकता है। उपज में अंतर को कम करके तथा संरक्षित सिंचाई के साथ उच्च उपजयुक्त किस्मों के उपयोग को



बाजरा

बढ़ावा देने पर पौष्टिक अनाजों का उत्पादन अत्यधिक बढ़ेगा। विभिन्न अंतिम उत्पादों के प्रसंस्करण हेतु उपयुक्त किस्मों की पहचान ज्यादा लाभदायक होगी। लघु पौष्टिक अनाजों के संबंध में, उचित प्रौद्योगिकियों के माध्यम से प्राथमिक प्रसंस्करण दक्षता को बढ़ाने से वे आर्थिक रूप में सुदृढ़ होंगे तथा मध्यम वर्ग एवं निर्धन वर्ग के लिए सस्ते एवं सुलभ होंगे। मांग सृजन के उपायों के माध्यम से अंत में किसानों के स्तर पर लाभ होने तथा उनकी आय में बढ़ोतरी होने के कारण मध्यम व बड़े पैमाने पर पौष्टिक अनाजों की खेती हेतु मांग बढ़ेगी। पौष्टिक अनाजों के स्वास्थ्यवर्धक एवं पोषक उत्पादों हेतु शहरी लोगों की मांग को मजबूती प्रदान करने के लिए पौष्टिक अनाजों के मूल्यवर्धित उत्पादों के विविधीकरण के लिए निजी क्षेत्र के निवेश को शामिल किया जाए, हालांकि वर्तमान में यह एक विशिष्ट बाजार है। इनसे किफायती तथा पर्यावरण अनुकूल खाद्य एवं पोषण सुरक्षा प्रदान करने के लिए पौष्टिक धान्य के ज्यादा उत्पादन हेतु देश सक्षम बनेगा। उक्त सभी नीतिगत पहलों से व्यापक पौष्टिक अनाज नीति का कार्यान्वयन होगा।

वर्तमान में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत इन फसलों को पौष्टिक अनाज के रूप में शामिल करने तथा संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय पौष्टिक अनाज वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लेने से, इन फसलों को देश और विश्वभर में यथोचित महत्व प्राप्त हो रहा है। इन प्रयासों से पौष्टिक अनाजों की खपत को बढ़ावा मिलेगा। इससे इन अनाजों की खेती के अंतर्गत क्षेत्र के विस्तार व उत्पादकता में वृद्धि होगी। ■